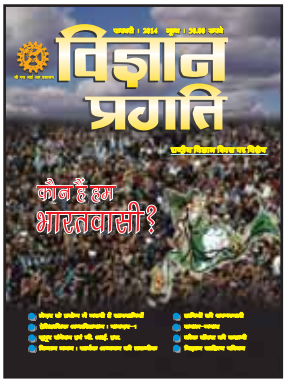

विज्ञान रत्न : विज्ञान प्रगति

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और इसकी विषय-वस्तु हमेशा से ही मेरे लिये उपयोगी सिद्ध हुई है। इसके प्रत्येक नये अंक में अभूतपूर्व और अद्वितीय ज्ञान निहित रहता है। मैं विज्ञान प्रगति की समस्त टीम को बधाई देना चाहता हूँ जिसने इस पत्रिका को विज्ञान की सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं में स्थान दिलाया। विज्ञान प्रगति का हर नया अंक पिछले अंक की तुलना में अधिक उत्कृष्ट होता है। प्रत्येक अंक की सटीकता और चित्रों की गुणवत्ता समय के साथ निखर रही है। इतने कम मूल्य में बहुपयोगी और ज्ञान से भरपूर पत्रिका उपलब्ध कराना काबिले तारीफ है। विज्ञान प्रगति के कुछ अंकों में ऐसे-ऐसे लेख प्रकाशित हुए हैं जो अपने आप में अनुपम व अभूतपूर्व हैं, उदाहरण के लिये फरवरी 2014 के अंक में 'कौन हैं हम भारतवासी? नामक लेख में इतिहास और विज्ञान का बहुत ही सुन्दर मेल प्रदर्शित हुआ है ; अप्रैल 2013 के अंक में डी.एन.ए. की खोज के बारे में भावनात्मक शैली में बताया गया। विज्ञान प्रगति के बारे में जितना लिखा जाये उतना कम होगा।

श्री मुरली मनोहर यादव, सुपुत्र डा. हरनारायण सिंह यादव, पेट्रोल पम्प के पास, गुरसराय रोड, करवा मोंठ, जिला-झांसी 284 303 (उ.प्र.) [मो. : 08004099354;
ई-मेल : murlimanohary@gmail.com]

सोचपरक पत्रिका

मैं विगत ग्यारह वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर विशेष विज्ञान प्रगति के फरवरी 2014 वाले अंक में प्रकाशित विज्ञान जगत की नवीन उपलब्धियों से रूबरू होने का अवसर मिला। इस अंक की आमुख कथा में भारत की प्राचीन जातियों एवं आनुवंशिक और आर्यों के भारत में आगमन इत्यादि महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहन मंथन को प्रस्तुत किया गया, जोकि मुझे बेहद पसंद आया। डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश' को उनकी अद्भुत काव्यशैली के लिए बधाई। अंतरिक्ष विषयक नियमित लेखक श्री कालीशंकर जी को उनके वायजर-1 पर आधारित लेख के लिए धन्यवाद!

मेरे कुछ छात्र मुझसे रिमोट सेंसिंग के विषय में पूछा करते थे, मैं उन्हें इसके बारे में बहुत विस्तार में नहीं बता पाता था क्योंकि जो भी सामग्री उपलब्ध थी वह अंग्रेजी में ही थी, लेकिन फरवरी 2014 के अंक में सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. पर आधारित लेख पढ़ कर इस विषय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई। हाथी की जीवन शैली पर निमिष कपूर जी की रिपोर्ट ज्ञानवर्द्धक लगी जोकि हमें हाथी के संरक्षण के प्रति आगाह भी करती है। मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि विज्ञान प्रगति अपने सामाजिक सरोकार व दायित्वों को निभाते हुए अपने प्रत्येक अंक में लोगों को आने वाली पर्यावरणीय समस्याओं से आगाह करती है। इतना ही नहीं यह प्राकृतिक प्रकोपों के निदान हेतु जागरूक भी कर रही है। विद्यालय में पढ़ने वाले नन्हें बच्चे जिन्हें प्रयोगशाला की जटिल प्रक्रियाओं, विज्ञान की बारीकियों, अणु-परमाणु, ब्रह्माण्ड की जटिलताओं के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है उनके लिए भी विज्ञान प्रगति में कार्टूनों पर आधारित चित्र कहानियों के माध्यम से वैज्ञानिकों की जीवनी समझाने का जो सफल प्रयास नीरद जी के द्वारा किया जाता है, वह सराहनीय है।

श्री रवि रौशन कुमार, मोबिल कॉर्नर, मिर्जापुर, पोस्ट-लालबाग, स्टेशन रोड, जिला-दरभंगा-846 004 (बिहार) [मो. : 09708689580; ई-मेल : info.raviraushan@gmail.com]

ज्ञानवर्द्धक पत्रिका

वाह, क्या बात है! यही शब्द निकले मेरे मुख से जब मैंने विज्ञान पत्रिका, विज्ञान प्रगति के फरवरी 2014 के अंक की आमुख कथा 'कौन हैं हम भारतवासी?' को पढ़ा। 'प्रो. सी.एन.आर. राव पर लिखा गया लेख बहुत ही रोचक लगा। 'लेजर के प्रयोग में जरूरी हैं सावधानियाँ', 'ऐतिहासिक अंतरिक्षयान : वायजर-1', 'वनस्पतियों एवं वनों के प्रबन्धन में सुदूर संवेदन एवं जी.आई.एस. का उपयोग', 'हाथियों की शरणस्थली' एवं 'ब्लैकबॉक्स की कहानी' ये सभी लेख अत्यन्त ही रोचक एवं ज्ञानदायी लगे।

'विज्ञान क्विज़', 'चित्र कथा' 'विज्ञान की शान ये वैज्ञानिक महान', 'सवाल जब-जब, जवाब तब-तब' लेख हमेशा ही इस पत्रिका की जान होते हैं। डा. अलकेश खत्री द्वारा लिखित 'कहाँ गए वो लोग? के अन्तर्गत प्रस्तुत लेख 'अंतरिक्ष परी : कल्पना चावला' एक बार फिर मुझे भावुक कर गयी।

श्री सर्वेश कुमार गुप्ता, सुपुत्र श्री राजकुमार गुप्ता, वैष्णव नगर, बिल्हौर, कानपुर नगर 209202 (उ.प्र.) [मो. : 09621290293]

लोकप्रिय पत्रिका

मुझे विज्ञान प्रगति का फरवरी 2014 का अंक काफी अच्छा लगा जिसकी आमुख कथा 'कौन हैं हम भारतवासी' से एक अलग तरह का अनुभव प्राप्त हुआ। चिन्तन मनन में 'सार्थक अध्ययन की तकनीक' हर बार की तरह अच्छा लेख था। आगे के क्रम में पुस्तक समीक्षा में 'विज्ञान साहित्य परिचय' विज्ञान प्रगति का नया लेख था जिससे नई-नई पुस्तकों के बारे में जानकारियाँ मिलीं। विज्ञान काव्य में मैरी क्यूरी से सम्बन्धित जानकारियाँ भी अच्छी लगीं।

श्री प्रिन्स दूबे, सुपुत्र श्री अनिल दूबे, वार्ड न. - 07, घुघली, महाराजगंज (उ.प्र.) [मो. : 09450432850;
ई-मेल : dubeyprince.ad@gmail.com]

सुधार के सम्बन्ध में

विज्ञान प्रगति के फरवरी अंक में पृष्ठ संख्या 61 पर 'भारत के प्रमुख वैज्ञानिक व तकनीकी संस्थानों के नाम छपे हैं जिसका संकलन श्री बिनोद कुमार तिवारी ने किया है, जो परीक्षार्थियों के लिए काफी उपयोगी है। इसमें क्रमांक 53 पर प्रश्न है कि 'इंडियन लेक रिसर्च इंस्टिट्यूट' कहाँ स्थित है? इस विख्यात् संस्थान की स्थापना 20 सितम्बर 1924 में हुई थी। 20 सितम्बर 2007 को इस संस्थान का नाम हिन्दी में 'भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान' (Indian Institute of Natural Resins & Gums) हो गया है। कृपया नाम सुधारने की कृपा करें।

श्री विनोद कुमार, तकनीकी अधिकारी पुस्तकालय, नामकुम, राँची 834010 (झारखण्ड) [फो. : 2261156;
ई-मेल : iinrg@ilri.ernet.in; libraryilri@ilri.ernet.in]

अविस्मरणीय पत्रिका

मंगल अभियानों पर विशेष विज्ञान प्रगति का जनवरी 2014 का अंक पढ़ा जिससे देश के अब तक के सबसे बड़े अंतरिक्ष मिशन के बारे में सविस्तार जानकारी मिली। 'सोलर सेटेलाइट पावर प्लांट' लेख द्वारा बहुत अभिनव जानकारी प्राप्त हुई। सौर ऊर्जा आधारित इस तंत्र का विकास होना बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत आवश्यक होगा। 'तार सेवा के इतिहास व कार्यविधि पर जानकारी देने के लिए जगदीप सक्सेना जी को बहुत-बहुत धन्यवाद, लेख का शीर्षक बहुत पसंद आया। इस लेख की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। तार सेवा का मैंने उपयोग तो नहीं किया लेकिन इस लेख को पढ़ने के बाद ऐसा लगता है कि जैसे तार भेजने का अनुभव हो चुका है। अन्त में सम्पादकीय टीम व सभी विज्ञान लेखकों को धन्यवाद जिनके समर्पित प्रयासों से पत्रिका का हर अंक अविस्मरणीय हो जाता है।

श्री वेद प्रकाश पाठक, पत्रकारिता छात्र, जागरण इंस्टीटयूट ऑफ मैनेजमेंट एंड मॉस कम्यूनिकेशन, कानपुर, (उ.प्र.)
[मो. : 07398896457; ई-मेल : vedjmd@gmail.com]

अनमोल खजाना

मैं विज्ञान प्रगति का विगत 3 वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मुझे एक मित्र के माध्यम से इस अनमोल खजाने की प्राप्ति हुई। विज्ञान प्रगति के सभी अंक रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक होते हैं। विज्ञान प्रगति ज्ञानरूपी प्रकाश हमारे जीवन में उजाला करता रहेगा जिसके लिए हम विज्ञान प्रगति के आदरणीय सम्पादकगणों के आभारी रहेंगे। इस पत्रिका के कुछ स्तंभ जैसे सवाल जब-जब जवाब तब-तब एवं विज्ञान प्रश्न बहुत ही उपयोगी होते हैं। जनवरी 2014 का अंक बहुत अच्छा लगा, इसके विशेष लेख 'मंगल हो मंगलयान का', 'सोलर सेटेलाइट पॉवर प्लांट' एवं 'भारतीय रेल' बहुत ही ज्ञानवर्धक लगे। ग्लेडियोलस व गुलदाउदी से संबंधित लेख बहुत ही सुन्दर लगे जिनसे फूलों की महत्ता एवं उनकी अनेक किस्मों की जानकारी मिली। अंत में विज्ञान प्रगति की पूरी टीम को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

आपके पत्र

उज्ज्वल भविष्य के पथ पर अग्रसर विज्ञान प्रगति,
कल के सपनों को वर्तमान में पिरोकर
अवगत कराती विज्ञान प्रगति।
कभी चिड़ियों के मनमोहक सुरों को बताती,
कभी बया के गुणों को दिखाती विज्ञान प्रगति।
कभी मोटे अनाजों के राज खोलती,
कभी हाइड्रोपोनिक्स के सपने दिखाती विज्ञान प्रगति।
यूं ही नहीं न्यारी है विज्ञान प्रगति,
सारी पत्रिकाओं से प्यारी है विज्ञान प्रगति।
धरती हो या नभ या नदियां व पठार,
अंतरिक्ष से लाए नए-नए विचार।
दिल खुश हो जाता है, जब अगला अंक आता है...

श्री संदीप कुमार, सुपुत्र श्री सुरेश प्रसाद, ग्राम - कृष्ण नगर, पोस्ट-परवानी गौढ़ी, मिहींपुरवा, जिला-बहराइच 271855 (उ.प्र.) [मो.: 09616817797; ई-मेल : sksagar.563@gmail.com]

ज्ञान दर्पण

मैं विगत कई वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और महसूस करता हूँ कि विज्ञान प्रगति पढ़ने से आने वाली पीढ़ी का विज्ञान के प्रति रुझान बढ़ेगा और एक नयी दिशा का आविष्कार होगा। विज्ञान प्रगति का हर एक अंक अत्यन्त रोचक व जिज्ञासापूर्ण होता है। फरवरी 2014 के अंक में डी.एन.ए., गुणसूत्रों और अनेक प्रजातियों में भिन्नता का ज्ञान प्राप्त हुआ। सार्थक अध्ययन की तकनीक के अन्तर्गत हमें यह ज्ञात हुआ है कि पढ़ते वक्त या कोई लेखन कार्य करते समय हमें किस रचनात्मक चिन्तन और केन्द्र पर ध्यान देना चाहिए। सवाल-जवाब स्तंभ तो हमेशा ही रोचक और ज्ञानवर्धक होता है।

श्री राकेश यादव, सुपुत्र तेरसु यादव, ग्राम-खरौना, पो.-रामपुर, जिला-गाजीपुर 233223 (उत्तर प्रदेश) [मो. : 08410159699; ई-मेल : rakeshtsyadav@gmail.com]

प्रकृति का आइना

ये दूर-दूर तक फैले हुए आसमान/गरजते बादल/कड़कती बिजली/उड़ती हुई धूल/कीचड़ में खिला हुआ कमल/काँटों में हँसता हुआ गुलाब/हवा का हल्का झोंका/गुस्साया हुआ दोपहर/क्रोधित पर्यावरण/मुस्कराती हुई शाम, इनकी कुछ वैज्ञानिकता होती है।

इस वैज्ञानिकता का चित्रण/वर्णन/जिक्र और फिक्र जिस पत्रिका में होता है। उसी पत्रिका का नाम है -

विज्ञान प्रगति प्रकृति का आइना है। अगस्त 2013 का 'देवभूमि बनी बहती देह भूमि', अक्तूबर 2012 का 'इक्कीसवीं सदी में धाम' व नवम्बर 2013 के पक्षियों पर विशेष अंक ने मन को छू लिया।

जहाँ हर पत्रिकायें अपने परिवेश को बढ़ा रही हैं वहीं विज्ञान प्रगति आपके पत्र कालम को छोटा क्यों कर रही है?

विज्ञान प्रगति जैसे फूलों की बरसात है,
अमावश की रात में रोशनी का जज्बात है।
है वही सूरमा इस जग में, जो अपनी राह बनाता है।
कोई चलता है पद चिन्हों पर, कोई पद चिन्ह बनाता है।।

विज्ञान रूपी सत्य को उजागर करने वाली यह पत्रिका एक प्रशस्त मार्ग दिखाती है। फरवरी 2014 'हाथियों की शरणस्थली' अच्छी लगी।

विज्ञान प्रगति में विज्ञान की छोटी लघुकथायें भी छापें। उमाशंकर मिश्र की कवितायें इस समय पढ़ने को नहीं मिल रहीं हैं।

सुश्री कुंजन मिश्रा, ग्राम-प्यारेपुर मिश्र, पोस्ट-मर्यादपुर, जिला मऊ (उ.प्र.)

नियमित पाठक

मैं विज्ञान प्रगति का पिछले चार वर्षों से नियमित पाठक हूँ। मुझे यह एक ऐसी पत्रिका लगी है जो पढ़ने वालों को वशीभूत कर देती है और न पढ़ने वालों के मन में इच्छा उत्पन्न कर देती है। मैं एक फिल्म का निर्माता व निर्देशक होने के साथ-साथ इस पत्रिका को बड़े मन से पढ़ता हूँ। फिल्म इंडस्ट्री भी एक तरह से विज्ञान पर ही आधारित है। आज विज्ञान की बदौलत ही हम फिल्मों में नई-नई चीजें दर्शकों को दिखाते हैं। यह सब विज्ञान की ही खोज है। मुझे गर्व है विज्ञान प्रगति पत्रिका के सभी सदस्यों पर जिन्होंने इस पत्रिका के माध्यम से हमारे देश के भविष्य को उज्ज्वल करने का बीड़ा उठाया है।

श्री चंदन गुप्ता, (फिल्म निर्माता व निर्देशक) (सह संस्थापक) स्मार्ट बिजनेट ग्रुप, कोलकाता (प. बंगाल) [मो. : 09163100174]

संग्रहणीय पत्रिका

मैं पिछले पांच वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे इसके सितम्बर 2013 के अंक में एस.के.वर्मा द्वारा लिखित 'वन धन' काफी अच्छा लगा। जब विज्ञान प्रगति का दिसंम्बर अंक मिला तो विष्णुप्रसाद जी द्वारा लिखित नोबल पुरस्कार 2013 के विजेता वैज्ञानिकों का जीवन परिचय बहुत ही ज्ञानवर्द्धक लगा। इसी अंक में निमिष कपूर जी द्वारा लिखित आमुख कथा 'नाभिकीय ऊर्जा जन जागरूकता अभियान' बहुत ही रोचक लगा। मुझे लगता है कि इससे लोगों की भ्रांतियां भी काफी हद तक दूर हो जायेंगी। विज्ञान प्रगति एक संग्रहणीय पत्रिका है। इसे पढ़ने के लिए मैं सभी छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहित करता रहता हूँ।

श्री दिलीप गंगवार, सुपुत्र डा. बाबूराम गंगवार, असिस्टेंट प्रोफेसर (लाइफ सांइस), ग्राम-पंसोली, पोस्ट-दलेलगंज, त. व जिला पीलीभीत-262001 (उ.प्र.) [मो. : 09410627368; 09058870954]

मनमोहक पत्रिका

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर केन्द्रित विज्ञान प्रगति का फरवरी 2014 का अंक मिला। इस अंक की आमुख कथा कौन हैं हम भारतवासी? का तो कहना ही क्या? आपने डी.एन.ए. जांच से प्राप्त परिणामों के आधार पर आज तक छिपा राज खोलकर सच को दुनिया के सामने ला दिया है। इसकी जानकारी बहुत ही कम लोगों को होगी, निश्चित ही इस ज्ञान के आधार पर प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे प्रतिभागियों को बहुत अच्छा मार्गदर्शन मिलेगा। विश्व में हाथियों की विविध प्रजातियों और उनकी खूबियों को विशेष लेख 'हाथियों की शरणस्थली' द्वारा लोकप्रिय टी.वी. चैनल 'डिस्कवरी' के समान रोचक रूप से प्रस्तुत किया गया। यह विज्ञान जगत की लोकप्रिय पत्रिका विज्ञान प्रगति मेरे विद्यालय की बालिकाओं को इस तरह अच्छी लगने लगी है कि पहले इसकी मात्र पांच प्रतियां ही विद्यालय द्वारा ली जाती थीं, लेकिन अब एक साथ एक सौ पत्रिकाओं का आर्डर पुस्तक विक्रेता को पूर्व में ही कर दिया जाता है ताकि स्टालों पर पत्रिका समाप्त होने के कारण इच्छुक छात्राओं को निराश न होना पड़े। हमारी ओर से बहुत सारी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

डा. वी.के वर्मा, जिलाध्यक्ष, रिसर्च सोसाइटी ऑफ होमियोपैथी (इण्डिया) पटेल एस.एम.एच. हास्पिटल, गोटवा, जिला-बस्ती-272001 (उ.प्र.) [मो. : 09415163328; 09559669921]

मार्गदर्शक पत्रिका

मैं कक्षा 9 का छात्र हूँ और मुझे विज्ञान प्रगति एक बेहतरीन एवं ज्ञानवर्धक पत्रिका लगती है। विज्ञान प्रगति पढ़कर विज्ञान की नई जानकारियों के बारे में जानने का अवसर मिलता है। मैं विज्ञान प्रगति की समस्त टीम से सहृदय निवेदन करता हूँ कि इसके किसी अंक में दिल के दौरे (Heart attacks) से संबन्धित संक्षिप्त जानकारी प्रकाशित करने का कष्ट करें। इसके लिए मैं विज्ञान प्रगति की समस्त टीम का आभारी रहूँगा।

श्री अभिषेक योगेन्द्र राज, सुपुत्र स्व. डा. योगेन्द्र प्रसाद, पोस्ट अख्तियारपुर, सरायरंजन, जिला-समस्तीपुर 848127 (बिहार) [मो. : 09939989820]

प्रकाशमयी पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का वर्ष 2009 से नियमित पाठक हूँ और मैकेनिकल इंजीनियरिंग एवं 1 RAJ EME COY. में सीनियर अण्डर ऑफिसर हूँ। मेरी सफलता के पीछे विज्ञान प्रगति का हाथ है, जिसने मेरे जीवन को प्रकाशमयी बनाया है। मेरी छात्र जीवन से ही विज्ञान प्रगति पढ़ने में रुचि रही है। मैं विज्ञान व अन्य वर्ग के सभी छात्र-छात्राओं व अभिभावकों से अनुरोध करता हूँ कि वे विज्ञान प्रगति के नियमित पाठक बनें।

श्री मुनेश कुमार पोसवाल (एस.यू.ओ.), सुपुत्र श्री विजय सिंह गुर्जर, गाँव गुलमानी, पोस्ट अलधानी, तहसील-नगर, जिला भरतपुर 321024 (राजस्थान) [मो.: 09887114414]

ज्ञान का भंडार

मैं विज्ञान प्रगति की नई पाठिका हूँ और इस पत्रिका से मेरी पहली भेंट नवबंर 2013 में हुई। पढ़ने के बाद मुझे लगा कि विज्ञान प्रगति वास्तव में ज्ञान का भण्डार है। इसमें छपने वाले सभी लेख, पहेली, सवाल-जवाब एवं चित्रकथा आदि अद्भुत एवं रोचक जानकारियों से भरे होते हैं। सिर्फ एक बार पढ़ने पर ही मैं इस पत्रिका से प्रभावित हो गई हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से मैं अपनी दोस्त एवं गाइड निधि और विज्ञान प्रगति की समस्त टीम का शुक्रिया अदा करना चाहूँगी।

सुश्री संध्या सुमन, सुपुत्री श्री प्रेमसागर झा, ग्राम+पोस्ट-बेल्लारी, थाना-उजियारपुर, जिला-समस्तीपुर 848132 (बिहार)